

प्रभु येशु ने, अपने मिशन कार्य के समय, अपने शब्दों का प्रयोग; लोगों के बीच घंगाई लाने के लिए, लोगों को नरकदूतों से मुक्त करने के लिए, मृतकों को जिलाने के लिए तथा स्वर्गराज्य की शिक्षा देने के लिए प्रयोग किया। कोई भी छल-कपट की बात, उनके मुख से कभी नहीं निकली, उन्होंने क्रूस में टंगते समय भी, किसी के साथ गाली-गलौज भी नहीं किया, यद्यपि लोग उनको ताना मारते थे, वे मौन रहे और लोगों के हृदय परिवर्तन के लिए, उन्होंने अपना मुख खोलकर ईश पिता से प्रार्थना की, “पिता! इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं” (लूकस 23:34)।

आज का पहला पाठ हमें अपने जीभ पर लगाम कस कर अपने व्यक्तित्व को स्वच्छंद बनाने के लिए निमंत्रण देता है। वार्तालाप में, मनुष्य के हृदयों के भाव, उभर कर बाहर आ जाते हैं। मनुष्य अनजाने में, अक्सर अपने हृदय के अन्तराल में छुपे, बुराईयाँ तथा अच्छाईयाँ, अपने जीभ के द्वारा जगत को, प्रकट करता है। यदि किसी ने अपने बातचीत में कभी बुराई न की हो, वह अवश्य एक जीवित संत है, जो कि बातचीत की गरिमा समझता है तथा अपने वचन से ईश्वर को महिमामय करता है। मनुष्य की प्रशंसा भी तब करनी चाहिए, जब उसकी बातचीत के द्वारा, किसी प्रकार का छल-कपट या बुराई न निकलती हो।

पहला पाठ हमें बताता है कि, हमारे आन्तरिक भाव, हमारे वार्तालाप में प्रकट होते हैं। जैसे, छलनी का प्रयोग करके, किसान अपने खेत में या घर में, कचरा अलग करता है; भट्टी में जलती अग्नी से, कुम्हार के बरतनों की परख होती है; ठीक उसी प्रकार, बातचीत में मनुष्य की परख होती है।

आज के पाठ हमें, अपने ख्रिस्तीय जीवन को, दूसरों के साथ प्रकट करने का निमंत्रण देते हैं। इसका तात्पर्य है, अपने शब्दों के द्वारा, लोगों को निराशा में आशा, परेशानी में सांत्वना, हर समय एक-दूसरे के बीच, ख्रिस्तीय प्रेम को प्रकट करने की शिक्षा मिलती है। अपने बुरे आदत जैसे, गप्पे मारना, अपने जीभ से, लोगों का न्याय नहीं करना, किसी के व्यक्तित्व को चोट पहुँचाने वाली बात नहीं फैलाना। शब्दों का प्रयोग, सोच-समझकर तथा लोगों के कल्याण के लिए करने की शिक्षा आज के पाठ हमें देते हैं।

भजन स्तोत्र (92) हमें, अपने जीवन में, ईश्वर को धन्यवाद देने के लिए, अपने जीभ का प्रयोग करने की शिक्षा, अप्रत्यक्ष रूप से देता है। प्रभु धर्मियों को, अर्थात् जिनके मुख से छल-कपट या जीवन में बुराई नहीं मिलती है, उनको आशीर्वाद देते हैं। धनी फलेंगे-फूलेंगे, वे लम्बी आयु तक फल उत्पन्न करते रहेंगे और अपने मुख से प्रभु को धन्यवाद देकर कहेंगे कि, प्रभु सच्चा है, तथा उसमें किसी प्रकार का कपट नहीं है। हमें अपना समय, ईश्वर की स्तुति करने में तथा उनके महान कार्यों के लिए, ईश्वर को धन्यवाद देने के लिए, तथा उनके कृपा-आशीष के लिए ईश्वर को आभार प्रकट करने के लिए, अपने जीभ का प्रयोग करना चाहिए।

संत पौलुस, कुरिथियों को कहते हैं कि, वे अपने विश्वास में दृढ़ रहें तथा यह जान लें कि, प्रभु के लिए उनका परिश्रम व्यर्थ नहीं हुआ है तथा निरंतर प्रभु के लिए कार्य करते रहें। यदि कोई, अनुपयोगी बातचीत में, समय गँवाता है, दोषारोपण में लिप्त रहता है, वह अपने ऊपर ईश्वर की दण्डाज्ञा लाता है और उसे, न्याय के दिन, अनंत जीवन का पुरस्कार नहीं मिलता है। सुसमाचार में संत लूकस, अपने जीभ पर नियंत्रण और अपने जीवन में अनुशासन न लाने वाले व्यक्तियों की तुलना अंधों से करते हैं, जो; दिन का प्रकाश न देखने के कारण, लड़कड़ाकर गिरते हैं। यदि ऐसे अंधे, दूसरों को मार्ग दिखाने की कोशिश करते हैं तो, ऐसी दशा में, दोनों गड्ढे में गिरते हैं और नष्ट होते हैं।

दूसरा पाठ हमें, नश्वरता से अनश्वरता को धारण करने वाले, पुनरुत्थान को, समझने की शिक्षा देता है। प्रभु, मृत्यु को हराकर, मृत्युंजय बन गये हैं और वे स्वयं हमें भी, मृत्यु के ऊपर जीत दिलाना चाहते हैं, इसलिए विश्वासियों का परिश्रम, प्रभु के सामने कभी व्यर्थ नहीं होता। हमें निरन्तर दृढ़ तथा अटल बने रहने की शिक्षा संत पौलुस देते हैं। हम हिम्मत न हारें, निराशा न हो जायें, जीवन के अन्त में, हमारा परिश्रम हमारे लिए गौरवमयी जीवन देता है।

आज के सुसमाचार में प्रभु येशु हमें दूसरों का न्याय न करने की शिक्षा देते हैं। न्याय करने का काम ईश्वर का है, वह अपने समय में, धर्मियों तथा विधर्मियों का न्याय करेंगे। हमारा कर्तव्य है; अपने भाई-बहनों को प्यार करके, उनकी मदद करना है। जब हमारा जीवन स्वच्छंद है, तभी हम दूसरों को सलाह दे सकते हैं, अच्छे जीवन जीने की प्रेरणा भी, अपने वचन, कर्म तथा आचरण से दे सकते हैं; अन्यथा हम अंधों के

सदृश ही हैं, जो दूसरों को रास्ता दिखाकर, दूसरों के साथ स्वयं गड़ढे में गिर जाते हैं। प्रभु येशु, पुराने व्यवस्थान के प्रवक्ता ग्रन्थ की शिक्षा को, अपनी शिक्षा में शामिल करके, कहते हैं कि; पेड़ की परख, उसके फल से होती है। अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं देता तथा बुरा पेड़ अच्छा फल दे नहीं सकता। ठीक इसी प्रकार, बुरे हृदय से बुरी बातें तथा अच्छे हृदय से, ईश्वर-भक्ति के स्तोत्र तथा जीवन का निर्माण करने वाली प्रेरणा भरी बातें ही निकलेंगी।

अच्छा पेड़ और अच्छे फल से तात्पर्य है कि, ख्रिस्तीय व्यक्ति; अपने जीवन में पवित्रात्मा से परिपूर्ण होकर, फल उत्पन्न करता है। पवित्रात्मा का फल है—प्रेम, आनन्द, शान्ति, सहनशीलता, मिलनसारि, दयालुता, ईमानदारी, सौम्यता और आत्म-संयम। [The fruit of the Spirit is Love, Joy, Peace, Patience, Kindness, Generosity, faithfulness, gentleness and Self-Control. (Galatians 5:22-23)]

एक सच्चा ख्रिस्तीय वह है, जो शालीनता से जीवन जीता है और यह समझता है कि, सभी घटनायें जो दिखती हैं, वे वास्तव में वैसे ही होने की कोई सौ प्रतिशत संभावना नहीं हैं; इसलिए आँखों देखी आधी-अधूरी सच्चाई से, कोई भी समझदार व्यक्ति दूसरों का न्याय नहीं करता है। (A Christian who lives graciously, understands that things are not always as they seem, so he seeks to refrain from making rash judgments.)

जीवन संदेश—

(1) हम एक-दूसरे का न्याय नहीं करें। केवल ईश्वर ही मनुष्य को संपूर्ण रूप से जानता है और पहचानता है, केवल उसी का न्याय परिपूर्ण है। ईश्वर में कोई कमी नहीं है, कोई बुराई नहीं है, उसको मनुष्य का न्याय करने का अधिकार है, लेकिन ईश्वर ने, मनुष्य को; दूसरे मनुष्यों का न्याय करने का अधिकार नहीं दिया है। प्रभु येशु ने, एक-दूसरे से प्यार करने की शिक्षा दी है तथा कहा है कि, दूसरों का न्याय न करो। यदि हम दूसरों का न्याय करता हैं, जिस नाप से हम दूसरों को नापते हैं अर्थात् जिस प्रकार हम दूसरों के ऊपर न्याय और दण्डाज्ञा सुनाते हैं, ठीक उसी मापदंड से, ईश्वर हमारा न्याय करेगा। इसलिए दूसरों का न्याय करने से बचते रहें।

Rash judgment on buying "Luxury items" with food stamps: A grocery store check-out clerk once wrote to advice-columnist Ann Landers to complain that she had seen people buy "luxury" food items—like birthday cakes and bags of shrimp—with their food stamps. The writer went on to say that she thought all those people on welfare who treated themselves to such non-necessities were "lazy and wasteful." A few weeks later Lander's column was devoted entirely to people who had responded to the grocery clerk. One woman wrote: "I didn't buy a cake, but I did buy a big bag of shrimp with food stamps. So what? My husband had been working at a plant for fifteen years when it shut down. The shrimp casserole I made was for our wedding anniversary dinner and lasted three days. Perhaps the grocery clerk who criticized that woman would have a different view of life after walking a mile in my shoes." Another woman wrote: "I'm the woman who bought the \$17 cake and paid for it with food stamps. I thought the check-out woman in the store would burn a hole through me with her eyes. What she didn't know is the cake was for my little girl's birthday. It will be her last. She has bone cancer and will probably be gone within six to eight months." Today, Jesus advises us to leave the judgment to God and to show mercy and compassion. (Rev. Richardson)